प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कुमाऊँ राइफल्स ने पंतनगर विश्वविद्यालय के साथ मनाया शेरॉन दिवस

पंतनगर। 21 सितम्बर 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय के गांधी हाल में आज अपराह्न में कुमाऊँ राइफल्स ने फिलिस्तीन के 'शेरॉन' जगह पर १९ सितम्बर, 1918 को लड़ी गई अपनी पहली प्रसिद्ध लड़ाई में प्राप्त विजय की 100वीं वर्षगांठ पर एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें पंतनगर विश्वविद्यालय ने भी सहभागिता की। कार्यक्रम के सूत्रधार कुमाऊँ राइफल्स के दिग्गज मेजर जनरल राज कौशल थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, सूबेदार देब सिंह एवं अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण, डा. आर.एस. जादौन, भी मंचासीन थे।

मेजर जनरल आर. कौशल ने इस अवसर पर कुमाऊँ राइफल्स से कुमाऊँ रेजिमेंट बनने तक के इतिहास के बारे में बताते हुए कहा कि इसकी स्थापना 23 अक्टूबर, 1917 को हुई थी। इससे पूर्व कुमाऊँनियों को अंग्रेजों ने गद्दार कौम का दर्जा दे रखा था क्योंकि उन्होंने कल्लू माहरा के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, जिसमें अंग्रेजों ने विजय पायी थी तथा श्री माहरा को फांसी पर चढ़ा दिया गया था। बाद में कुमाऊँ के एक सैनिक चंद्री ने बर्मा में अंग्रेजों की ओर से युद्ध लड़ते हुए बड़ी बहादुरी दिखाई थी तथा उन्हें वीरता का तमगा देते वक्त उनसे उनकी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कुमाऊँ की पलटन बनाने की इच्छा जाहिर की। इसके बाद ही बरेली में कुमाऊँ राइफल्स की स्थापना हुई जिसको 11वें महीने में ही फिलिस्तीन में लड़ाई लड़ने हेतु भेजा गया जहां उन्होंने पांच अधिकारियों व 58 जवानों की शहादत के बाद विजय पाई। इसी विजय को मनाने के लिए 'शेरॉन डे' आयोजित किया जाता है जिसका उद्देश्य हर्षोल्लास से विजय दिवस मनाने के साथ-साथ दिवंगत आत्माओं को सम्मान देने तथा कुमाऊँ राइफल्स के सैनिकों व अधिकारियों को उत्साहित करना है। मेजर जनरल कौशल ने पंतनगर में मनाये गये इस दिवस को अपनी जिन्दगी का यादगार दिन बताया जिसे वे हमेशा याद रखेंगे।

कुलपति प्रो. मिश्रा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि प्रत्येक भारतवासी की स्वछंदता देश के सैनिकों के कारण ही है जो हमें सुरक्षा प्रदान करते है तथा सेना के बलिदान व एहसान को हम कभी भूल नहीं सकते है। कुमाऊँ रेजिमेंट को उन्होंने सबसे पहला परमवीर चक्र प्राप्त करने वाली बताया जिसमें अब 19 बटालियन हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में युद्ध शक्ति के मुकाबले बुद्धि से अधिक लड़ा जायेगा। यह देखते हुए सेनाओं में छात्राओं की प्रतिभागिता और बढ़ने की सम्भावना है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. जादौन ने सभी उपस्थित अतिथियों एवं अन्य का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में सूबेदार लछ्छम सिंह ने कुमाऊँ रेजिमेंट एवं देश की प्रशंसा में गीत गाया तथा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें देशभक्ति के गीत व नृत्य के साथ-साथ पहाड़ी गीत, कठपुतली नृत्य व गुजराती नृत्य सम्मिलित थें। कुमाऊँ रेजिमेंट के बैण्ड व आर्केस्ट्रा ने भी देशभक्ति के गानों की धुन व गीत प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में मेजर जनरल कौशल ने कुलपति व विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किया। कुलपति ने भी मेजर जनरल कौशल एवं सूबेदार देव सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कर्नल नवीन पीएन, विंग कमाण्डर आरएस जाधव, विश्वविद्यालय के अधिकारी व कर्मचारी, कुमाऊँ रेजिमेंट के अधिकारी, विश्वविद्यालय की एनसीसी के विद्यार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थें।

शेरॉन डे पर गांधी हाल में कुमाऊँ राइफल्स का इतिहास बताते हुए मेजर जनरल आर. कौशल ।

(नरेश कुमार)
समाचार समन्वयक